10

मसीह का झुंड

''और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं: मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा'' (यूहन्ना 10:16)।

''अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है ...'' (प्रेरितों 20:28)।

ज़िम्मेदारियां बढ़ने पर मैं बच्चों की एक हताश घड़ी की कहानी पर विचार करने लगता हूं। एक बूढ़ी घड़ी ने हिसाब लगाया कि प्रत्येक वर्ष वह कितनी बार टिकटिक करती है और इस हिसाब ने उसे भौंचक्का कर दिया। यह सोचकर कि वह इतनी बार टिकटिक करती है, उस घड़ी ने निराश होकर चलना ही बन्द कर दिया था। उसने निष्कर्ष निकाला कि वह इतनी बार तो टिकटिक कर ही नहीं सकती। साथ वाली दूसरी घड़ी ने उसकी इस निराशा को समझकर उससे बात की। उसने उसे समझाया कि उसे एक दिन में केवल एक ही बार, एक घण्टे में एक ही बार, एक मिनट में एक ही बार, एक बार में एक ही बार टिक करनी पड़ती है। उसके उपदेश से उस बूढ़ी घड़ी की निराशा दूर हो गई। इस सच्चाई पर विचार करके कि उसे तो एक समय में एक ही बार चलना है, उसकी जान में जान आ गई, उसे एक नई ताज़गी मिल गई और उसने फिर से चलना आरम्भ कर दिया।

हमारे प्रभु ने समझाया है, ''सो कल के लिए चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुख बहुत है'' (मत्ती 6:34)। निराशा का एक इलाज यह याद रखना है कि जीवन एक दिन में केवल एक ही बार जिया जाता है।

क्या आप भयभीत हैं? क्या आप शैतान की इस भयंकर शक्ति से चिन्तित हैं कि वह परमेश्वर के लोगों पर जय पा लेता है। क्या आप यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि कल आपके लिए क्या लाएगा? क्या आप प्रभु के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए परेशान हैं।

यूहन्ना 10 अध्याय में यीशु ने एक उदाहरण देकर इन तथा कई दूसरे भयों को सम्बोधित किया। उसने अपने अनुयायियों को अपना झुण्ड कहा और उनसे अपने सम्बन्ध को एक चरवाहे के अपनी भेड़ों से सम्बन्ध के रूप में चित्रित किया है। भयभीत या चिन्तित होने पर उसके उदाहरण को स्मरण करें। यह आपको यह अहसास दिलाकर कि ''जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है'' (1 यूहन्ना 4:4) सांत्वना देगा। यह आपको उस महान सम्भाल और प्रेम का स्मरण भी कराएगा जो यीशु के अनुयायियों को मिलता है।

यीशु ने अपने अनुयायियों के साथ जिन्हें उसने अपनी कलीसिया कहना था, भविष्य में अपने सम्बन्ध के बारे में पहले बताते हुए, उस समय अपने अनुयायियों के साथ अपने सम्बन्ध की बात करने के लिए इस उदाहरण[1] का इस्तेमाल किया (मत्ती 16:18)। इस रूपक में अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन देने वाले अच्छे चरवाहे का चित्र दिखाया गया है (यूहन्ना 10:15, 17, 18)। यह प्रत्यक्ष रूप से यीशु के क्रूसारोहण का संकेत देता है जिसके द्वारा उसने कलीसिया को खरीदा (प्रेरितों 20:28; इफिसियों 5:25)। उसने दूसरी भेड़ों की बात की जो उसके पास आनी थीं: ''और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं: मुझे उन को भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा'' (यूहन्ना 10:16)। ये आयतें दिखाती हैं कि आज कलीसिया को मसीह के झुंड के रूप में देखा जाना चाहिए।

झुंड के रूप में कलीसिया पर विचार करने पर ही हम समझ सकेंगे कि मसीह अपनी कलीसिया के लिए क्या करता है। इसलिए, आइए पूछें कि, ''मसीह का अपने झुंड अर्थात कलीसिया से क्या सम्बन्ध है? चरवाहे के रूप में, मसीह, कलीसिया के लिए क्या करता है?''

मसीह कलीसिया का प्रभु है

इस एकरूपता में जो पहली स्पष्ट सच्चाई है वह यह है कि मसीह कलीसिया का प्रभु है। जिस चरवाहे के रूप में यीशु अपने आपको दिखाता है वह भेड़ों का स्वामी है; उसे झुंड पर सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त है।

जैसे भेड़ चरवाहे की व्यक्तिगत सम्पत्ति बन जाती है वैसे ही झुंड में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति मसीह की सम्पत्ति बन जाता है। स्वामित्व की यह धारणा दो दिशाओं में चली जाती है: पहली, इसका अर्थ है कि भेड़ें चरवाहे के लिए जीवित हैं। क्योंकि हम मसीह के हैं, इसलिए हम मसीह के दास हैं (फिलिप्पियों 1:1)। दूसरा, यह संकेत देता है कि चरवाहा भेड़ों के लिए जीवित है। भेड़ों का स्वामी होने के कारण, चरवाहा भेड़ों से प्रेम करता है, उनके लिए जिम्मेदार है, और उनके रख रखाव का प्रबन्ध करता है। स्वामित्व के साथ ही एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है और एक अच्छा चरवाहा उस दायित्व को पूरा करता है।

कहते हैं कि ''बच्चों की सम्भाल माता-पिता की तरह कोई नहीं कर सकता; उनकी जिम्मेदारी उन पर है। वे अपने बच्चों पर आनन्दित होते हैं, उनके लिए आवश्यक वस्तुएं

उपलब्ध करवाते हैं और उनके भविष्य की योजनाएं बनाते हैं।

हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर का सर्वशक्तिमान पुत्र, मसीह अपने लोगों की सम्भाल पूरी तरह और कोमलता से करेगा। धन्यवाद के एक भजन में, दाऊद ने अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करते रहने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया: ''मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूं; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है'' (भजन संहिता 37:25)। पहाड़ी उपदेश पर यीशु ने अपने चेलों को समझाया, ''इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे'' (मत्ती 6:31)। यीशु ने कहा, ''चोर किसी और काम के लिए नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10)। हमारा अच्छा चरवाहा हमारा मालिक है और उसे हमारी भौतिक और आत्मिक आवश्यकताओं का पता होता है।

इस सच्चाई से हमें काफ़ी प्रभावित होना चाहिए। मसीह के हमारे प्रभु होने का अर्थ है कि उसका हम पर अधिकार है। हम चिन्ता क्यों करें? हम क्यों डरें? अच्छे चरवाहे में भरोसा रखें जो आपका ध्यान रखता है। हमारी एकमात्र ज़िम्मेदारी यीशु को प्रभु मानकर उसके पीछे चलने की है; बाकी सब वह सम्भालता है।

मसीह कलीसिया की अगुआई करता है

दूसरा, ''अच्छे चरवाहे'' की एकरूपता हमें स्मरण दिलाती है कि मसीह कलीसिया की अगुआई करता है। जिस प्रकार भेड़ें अपने चरवाहे के पीछे चलती हैं, वैसे ही कलीसिया मसीह के पीछे चलती है। हम उसकी आवाज़ सुनकर उसे उत्तर देते हैं। यीशु ने कहा:

मैं तुम से सच-सच कहता हूं, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु और किसी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है। परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है। उसके लिए द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है (यूहन्ना 10:1-3)।

हर रात, चरवाहा अपनी भेड़ों को एक बाड़े में लाता था जिसमें चारदीवारी है और केवल एक ही प्रवेश द्वार होता था। उस द्वार पर सारी रात पहरे के लिए एक द्वारपाल खड़ा किया जाता था। सुबह, चरवाहा आता और द्वारपाल उसे पहचान लेता। फिर उसे भेड़शाला में प्रवेश करने की अनुमति मिल जाती, अपनी भेड़ों को वह स्वयं बुलाता और चराने के लिए उनकी अगुआई करता। चोर या लुटेरा भेड़शाला में दीवार फांदकर प्रवेश करता है। द्वारपाल उसे पहचानता नहीं इसलिए उसे भेड़शाला में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देता था।

यीशु ने आगे कहा, ''और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है, तो उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं। परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी, परन्तु उस से भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानतीं'' (यूहन्ना 10:4, 5)। सुबह, जब चरवाहा भेड़शाला में से अपनी भेड़ों

को लेने के लिए आता है, तो वह केवल झुंड के आगे चलता और उन्हें बुलाता है। भेड़ें उसकी आवाज सुनकर उसकी ओर भागती हैं। झुंड से निकलकर भेड़ें सुरक्षित नहीं रहतीं, उन्हें केवल चरवाहा ही सुरक्षित रख सकता था। वे उसी पर निर्भर रहती थीं कि वह उन्हें बाहर चराने के लिए ले जाए जहां वे बिना किसी भय तथा हानि के चर सकें।

चरवाहा भेड़ों का स्वामी भी था। भेड़ें उधर ही जाती थीं जहां वह उन्हें ले जाता था। वे उसकी अगुआई तथा समझ के अनुसार चलतीं। सब पशुओं में से, भेड़ों में ही पीछे चलने का गुण है। उन्हें इधर-उधर जाने की पूरी समझ नहीं होती। अपनी इच्छा से जाने पर, उनके साथ किसी भी समय दुर्घटना हो सकती है। परन्तु, यदि उनकी अगुआई उचित रीति से हो तो वे अच्छे जीवन का आनन्द लेती हैं।

इस बात में हम भेड़ों की तरह ही हैं। बिना अगुआई के हम अंधों की तरह सहायता के लिए अंधेरे में इधर-उधर भटकते हैं। यशायाह ने लिखा था, ''हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; ...'' (यशायाह 53:6)। यिर्मयाह ने कहा था, ''हे यहोवा, मैं जान गया हूं, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं'' (यिर्मयाह 10:23)। हमें सही अगुआई लेनी चाहिए, वरना दुख हमारी प्रतीक्षा करता है।

जैसे भेड़ के लिए अच्छा चरवाहा होता है वैसे ही यीशु हमारा अगुआ तथा रक्षक है। वह कलीसिया का सिर (इफिसियों 5:23), हमारा उद्धारकर्त्ता है जो हमें महिमा में लाता है (इब्रानियों 2:10)। उसकी ओर हम ''परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान, अर्थात धर्म, और पवित्रता और छुटकारे'' के रूप में देखते हैं (1 कुरिन्थियों 1:30)। अपनी कमियों को जानते हुए और उसे जो हमें यह अहसास दिलाता है कि मसीही लोगों का मुख्य कार्य है कि वे ''विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें'' (इब्रानियों 12:2) हम उसे केवल देखते ही नहीं हैं बल्कि अपने अगुवे और प्रभु के रूप में उसे ताकते भी हैं।

ऊंचे-नीचे, तीखे मोड़ों और गहरे संकरे दर्रों वाले पहाड़ी क्षेत्र में आधी रात को बिना लाइटों वाली गाड़ी चलाने का प्रयास करने की कल्पना कीजिए। ऐसा करने का अर्थ आत्महत्या करना है। दुर्घटना होनी निश्चित है। आपको पता भी नहीं चलेगा कि आपकी दुर्घटना कब और कहां हो गई। यह स्थिति एक पापी व्यक्ति का बिल्कुल सही चित्र है जो बिना ईश्वरीय अगुआई के इस संसार में मार्ग ढूंढ़ने का यत्न कर रहा है। ख़तरनाक मार्ग पर बिना लाइटों से गाड़ी चलाने वाले व्यक्ति की तरह वह भी विनाश की ओर जा रहा है! परन्तु, यीशु हमें आश्वस्त करता है कि वह अपनी भेड़ों को ईश्वरीय अगुआई देता है और यह कि जीवन के पहाड़ों, वादियों, खाइयों और घाटियों का उनके जीवन में कोई भय न हो। जब यीशु हमारा अगुआ हो, तो हम जीवन की अपनी यात्रा में सुरक्षित रहकर आराम कर सकते हैं।

शिकारियों के एक झुंड ने अफ्रीका के जंगल में से यात्रा आरम्भ करते समय अपने गाइड से पूछा, ''आपके पास नक्शा है?'' उसने उत्तर दिया, ''मैं ही तुम्हारा नक्शा हूं!'' हमारे साथ यीशु का यही सम्बन्ध है, अपने वचन के द्वारा वह हमारा नक्शा है! किसी ने कहा है, ''यीशु के पीछे चले बिना उसकी सुनी तो जा सकती है, उसकी सुने बिना उसके

पीछे नहीं चला जा सकता।'' हम उसके वचन को सुनकर उसके पीछे चलते हैं।

यह अहसास करके कि इधर-उधर जाने की अपनी कम समझ होने के कारण हम निराश हो सकते हैं, परन्तु यह ज्ञान कि हमारे पास एक सबसे बुद्धिमान, गलती न करने वाला चरवाहा हमारी अगुआई करके हमारी निराशा को यीशु से हमारे सम्बन्ध को कभी खत्म न होने वाली प्रशंसा में बदल देता है। हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता हमारे सर्वशक्तिमान, सबसे बद्धिमान अगुवे ने पूरी कर दी है।

मसीह कलीसिया से प्रेम करता है

तीसरे, इस रूपक में मसीह को अच्छे चरवाहे के रूप में दिखाया गया है जो कलीसिया से प्रेम करता है और अपनी इच्छा से उसके लिए अपना प्राण देता है। वह भेड़ों को सम्भालता है और उनकी रक्षा अपना बलिदान देकर करता है। यीशु ने कहा:

अच्छा चरवाहा मैं हूं; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है। मजदूर जो न चरवाहा है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तित्तर-बित्तर कर देता है। वह इसलिए भाग जाता है कि वह मजदूर है, और उस को भेड़ों की चिन्ता नहीं। अच्छा चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं। इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें, मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूं (यूहन्ना 10:11-15)।

अच्छे चरवाहे की तरह यीशु में अन्य दोनों प्रकार के चरवाहों से बहुत भिन्नता है। पहली, वह भाड़े के चरवाहे की तरह नहीं है जो केवल धन कमाने के लिए यह काम करता है। भाड़े का चरवाहा धनलोलुप है अर्थात उसे उसके काम के लिए धन दिया जाता है। वह दुष्ट या बुरा तो नहीं है, परन्तु वह सच्चे चरवाहे की तरह भेड़ों के लिए अपनी व्यक्तिगत दिलचस्पी के कारण काम नहीं करता है। उसे काम पूरा होने के बाद, भेड़ों के प्रति कोई जिम्मेदारी नहीं लगती। दूसरा, यीशु उस अविश्वासी चरवाहे की तरह नहीं है जो अपने स्वार्थी उद्देश्यों के कारण अपने कार्य को पूरा नहीं कर पाता। यहेजकेल ने परमेश्वर के लिए बात करते हुए बड़ी स्पष्ट भाषा में अविश्वासी चरवाहे के विषय में लिखा था:

> तुम ने बीमारों को बलवान न किया, न रोगियों को चंगा किया, न घायलों के घावों को बान्धा, न निकाली हुई को फेर लाए, न खोई हुई को खोजा, परन्तु तुम ने बल और जबर्दस्ती से अधिकार चलाया है। वे चरवाहे के न होने के कारण तितर बितर हुई हैं; और सब वनपशुओं का आहार हो गईं। मेरी भेड़-बकरियां तितर-बितर हुईं; वे सारे पहाड़ों और ऊंचे ऊंचे टीलों पर भटकती थीं; मेरी भेड़-बकरियां सारी पृथ्वी के ऊपर तितर बितर हुईं; और न तो कोई उनकी सुधि लेता था, न कोई उनको ढूंढ़ता था। (यहेजकेल 34:4-6)।

यीशु इन चरवाहों की तरह नहीं है। वह ''अच्छा'' चरवाहा है। ''अच्छे'' के लिए जिस

शब्द का यीशु ने इस्तेमाल किया वह ''सुन्दर'' जैसा ही है। वह सुन्दर चरवाहा है। उसे सेवा करने के लिए वेतन नहीं दिया जाता, बल्कि उसने सेवा के लिए अपने प्राण देकर मोल चुकाया क्योंकि वह भेड़ों से प्रेम करता है। उसने उनकी रक्षा का दाम अपने लहू से चुकाया। जब खतरा होता है, अर्थात जब कोई भेड़िया या शेर झुंड को हानि पहुंचाने के लिए आता है, तो वह अपने आपको हानि से बचाने के लिए छुपाता नहीं। वह भेड़ों को बचाने के लिए अपनी जान की बाजी लगा देता है।

यीशु का भेड़ों से वैसे ही गहरा सम्बन्ध है जैसे पिता से अर्थात बहुत ही निकट, स्नेहपूर्ण और यूहन्ना 10:14,15 के अनुसार एक महसूस करने वाला सम्बन्ध है। यीशु ने अपनी भेड़ों से अपने सम्बन्ध को बताने के लिए इन दो आयतों में ''जानता'' शब्द को चार बार इस्तेमाल किया है। वह अंधेरे और प्रकाश में, दुखी और स्वस्थ होने पर, ख़तरे और शान्ति के समय अपनी भेड़ों के साथ रहता है। वह अपनी भेड़ों को नाम से जानता है। प्रत्येक भेड़ पर वह विशेष ध्यान देता है, उससे प्रेम करता है और उसमें दिलचस्पी लेता है। वह अपनी भेड़ों की सहायता करता, उनकी सम्भाल करता और बड़ी कोमलता से उनको देखता है; ख़तरे के समय वह पूरी शक्ति से ढाल बनकर उनकी रक्षा करता है।

एक बूढ़े दम्पत्ति की कहानी इस प्रकार से है जो बांध टूटने के बाद बाढ़ में घिर गए थे। पानी ऊपर चढ़ रहा था और बचाव कार्य जारी थे। परन्तु सब जगह पानी ही पानी था और ऊंचाई पर चढ़ना बहुत जोखिम भरा हो गया था। उनके लिए एक-एक पल बहुत कीमती था। बूढ़ा दम्पत्ति सहायता के लिए अपने घर की छत पर चढ़कर प्रतीक्षा कर रहे थे। जब बचाव में लगे लोगों की किश्ती आई, तो उसमें केवल एक ही आदमी के लिए स्थान था। पति ज़ोर देकर कहने लगा कि उसकी पत्नी बैठ जाए, परन्तु पत्नी ने साफ़ इन्कार कर दिया। वह हर जोखिम में अपने पति के साथ रहना चाहती थी। समय बर्बाद नहीं किया जा सकता था क्योंकि पानी बड़ी तेजी से बढ़ रहा था। किश्ती के बचाव दल के इंचार्ज़ ने उनसे कहा, ''मैं इन लोगों को सुरक्षित स्थान पर छोड़ आऊं और जल्दी से आप दोनों को लेने के लिए आता हूं। लगता है यही उचित रहेगा, परन्तु हम बहुत बड़ा जोखिम उठा रहे हैं। पानी बड़ी तेजी से ऊपर चढ़ रहा है।'' वह ऊंचे स्थान पर गया, वहां दूसरे लोगों को उतारकर वापस आया तो उसे केवल वह घर ही मिला और दम्पत्ति तेज पानी में बह चुके थे। पत्नी यह जानते हुए भी कि दोनों इकट्ठे रहने पर मर सकते हैं, अपने पति के साथ ही रही। क्या इससे बड़ा कोई प्रेम है? हां। ''इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे'' (यूहन्ना 15:13)। दूसरों को बचाने के लिए अपना प्राण देना सबसे बड़ा प्रेम है। हमारा चरवाहा ऐसा ही प्रेम करता है जो बहरा तथा मृत्यु से भी शक्तिशाली है। वह अपना प्राण भेड़ों के लिए देता है (यूहन्ना 10:15)। सभी प्रमाण संकेत देते हैं कि यूहन्ना रचित सुसमाचार पहली शताब्दी के अन्त तक सम्भवत: 85-95 ईस्वी में लिखा जा चुका था। इसलिए, इसके पहले पाठक जानते थे कि यीशु ने केवल कहा ही नहीं था कि वह भेड़ों के लिए अपना प्राण देगा, बल्कि उसने वास्तव में अपना प्राण दिया भी था। उसने कलीसिया के लिए मरकर अपनी भेड़ों के लिए अपनी बात को पूरा करके दिखाया था।

हमारे लिए यह सत्य कितना दृढ़ करने वाला होना चाहिए! हमें ऐसा प्रभु मिला है जो सर्वशक्तिमान है और हमारी अगुआई करता है। वह हम में से हर एक से प्रेम करता है और उसने न केवल अपनी अगुआई देने का ही बल्कि अपना प्रेम और सुरक्षा देने का भी वायदा किया है। पौलुस ने कहा, ''क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे'' (रोमियों 5:10)। यदि यीशु ने हमसे जब हम अभी पाप ही में थे इतना प्रेम किया कि वह हमारे लिए मर गया, तो अब जब हम उसके लिए जीने और उसकी भेड़ बनने की कोशिश कर रहे हैं, हमारे उद्धार के लिए वह कितना कुछ कर सकता है?

सारांश

यूहन्ना 10 अध्याय में मसीह द्वारा दिए गए रूपक में ऐलान है कि कलीसिया मसीह का झुंड है और यह उन सब भेड़ों को मिलाकर बनती है जो उसकी हैं। उसने कहा, ''और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं: मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा'' (यूहन्ना 10:16)। ''और भी भेड़ें'' उसने अवश्य ही अन्य जातियों को कहा होगा जिन्होंने उसकी आवाज़ सुनकर उसके झुंड में आना था। उसके रूपक में केवल एक झुंड और एक ही चरवाहा है। या तो हम उसके झुंड में हैं अर्थात एक ही चरवाहे के अधीन या हम उसके झुंड में नहीं हैं। या तो हम उसकी कलीसिया में हैं, जो नये नियम की कलीसिया है, या नहीं हैं।

झुंड/चरवाहे के व्यावहारिक तात्पर्यों में से एक यह है कि यह हमारे भय को कम करके निकाल देता है। हम जानते हैं कि हम कौन हैं, क्योंकि हम उसकी भेड़ें हैं; हम जानते हैं कि क्या करना है क्योंकि हम उसकी आवाज़ सुनकर चलते हैं; हमारा भविष्य सुरक्षित है क्योंकि उसका जीवन तथा मृत्यु हमारी रक्षा करता है। हमें लगता है कि हम उसके हैं क्योंकि वह हमारा प्रभु है; हमें सच्चा ज्ञान मिल गया है क्योंकि स्वर्ग का प्रभु हमारा अगुआ है; और सर्वशक्तिमान मसीह की ओर से जो हमारे लिए अपना प्राण देने के लिए तैयार था हमें स्वर्गीय सम्भाल मिलती है! यदि हम जानते हैं कि हम कौन हैं, हमें ईश्वरीय अगुआई और मसीह की बलिदानपूर्वक सुरक्षा मिली है तो हमें डरने की क्या आवश्यकता है? अपने चरवाहे पर हमारा विश्वास हमारे भय को निकाल देता है।

हम भजन संहिता 23 के शब्दों को उन्हें यीशु के लिए कह सकते हैं। बेशक वे मूसा के युग में दाऊद द्वारा परमेश्वर के विषय में लिखे गए थे:

> [यीशु] मेरा चरवाहा है,
> मुझे कुछ घटी न होगी।
> वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है;
> वह मुझे सुखदायी जल के झरने के पास ले चलता है।
> वह मेरे जी में जी ले आता है

धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त
मेरी अगुआई करता है।

चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं,
तौभी हानि से न डरूंगा;
क्योंकि तू मेरे साथ रहता है;
तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।
तू मेरे सताने वालों के साम्हने मेरे लिए
मेज़ बिछाता है;
तू ने मेरे सिर पर तेल मला है,
मेरा कटोरा उमड़ रहा है।
निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर
मेरे साथ-साथ बनी रहेगी;
और मैं [अपने उद्धारकर्त्ता अर्थात अच्छे चरवाहे के साथ]
सर्वदा वास करूंगा।

कई वर्ष पूर्व एक बहुत ही जवान प्रचारक के रूप में, मैं मसीह में एक भाई के जनाजे में गया था। जनाज़े पर जिस सुसमाचार प्रचारक ने वचन सुनाया था, वह मेरा सगा भाई था। जहां तक मुझे याद है, मरने वाला व्यक्ति केवल चालीस वर्ष के लगभग था। मेरे भाई ने इस मसीही व्यक्ति के मरने से पहले कहे गए कुछ शब्द दोहराए थे। उसने कहा था कि उसने धीरे-धीरे भजन 23 का उच्चारण किया था और उस भजन का अन्तिम शब्द उसके मुंह से निकलते-निकलते उसकी सांस बंद हो गई थी। जीवन के अपने अन्तिम पलों में उसे भजन संहिता 23 बोलने से सांत्वना मिली थी।

जब हमारे चरवाहे के रूप में परमेश्वर पर विचार किया जाता है तो परेशान और डरे हुए मनों में शान्ति और धैर्य प्रवेश करता है। यह रूपक जो यीशु को अच्छे चरवाहे के रूप में और उसके अनुयायियों को उसकी भेड़ों के रूप में दिखाता है वैसे ही हमारे भयों में हमारी सहायता कर सकता है।

यदि आप मसीह के झुंड में नहीं हैं तो याद रखिए कि आपको उस एकमात्र द्वार अर्थात स्वयं मसीह के द्वारा उसके झुंड में प्रवेश करना पड़ेगा। अपने विस्तृत और विशाल रूपक में (यूहन्ना 10:1-5, 10-18) मसीह ने एक छोटा सा रूपक भी डाल दिया (यूहन्ना 10:7-9)। उसने कहा, ''द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा'' (यूहन्ना 10:9)। बाद में मसीह ने कहा, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। जब कोई मसीह की बातों को मानता है तो वह उसके झुंड में प्रवेश कर जाता है (यूहन्ना 8:24; लूका 13:3; मत्ती 10:32, 33; मरकुस 16:16)।

अच्छे चरवाहे अर्थात मसीह के पास आएं। उसके झुंड में प्रवेश करें, अपने जीवन की चरवाही करने की उसे अनुमति दें और उस भरपूर जीवन में भाग लें जो वह देता है (यूहन्ना

10:10) उसके झुंड में, आपको उद्धार (यूहन्ना 10:9), भरपूरी का जीवन (यूहन्ना 10:10), अगुआई (यूहन्ना 10:4, 5) और अनन्त जीवन (यूहन्ना 10:17) मिलेगा। क्या मसीह के झुंड की भेड़ के रूप में रहने से अच्छे जीवन की कल्पना की जा सकती है ?

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. जब आप हताश होते हैं तो क्या करते हैं ?
2. यूहन्ना रचित सुसमाचार में कितने दृष्टांत दिए गए हैं ?
3. वर्णन करें कि मसीह के कलीसिया के प्रभु होने का हमारे और उसके लिए क्या अर्थ है।
4. आपको यह तथ्य कैसे उत्साहित करता है कि मसीह अपने झुंड की सम्भाल करता है ?
5. यूहन्ना 10:10 के संदर्भ तथा विशेष अर्थ पर चर्चा करें।
6. भेड़ों द्वारा अपनी अगुआई करने में असमर्थ होने का वर्णन करें।
7. चरवाहा अपनी भेड़ों को अगुआई कैसे देता है ?
8. ईश्वरीय अगुआई का इन्कार करने वाले लोगों का भविष्य कैसा है ?
9. ''भाड़े का'' का वर्णन करते हुए उसकी तुलना एक अच्छे चरवाहे से करें।
10. यहेजकेल 34:4-6 में दिखाए एक अविश्वासी चरवाहे की विशेषताएं बताएं।
11. यूहन्ना 10 में ''जानता'' शब्द के इस्तेमाल पर ध्यान दें और इस शब्द के अर्थ पर टिप्पणी करें (आयत 14 और 15 पर ध्यान दें)।
12. यूहन्ना 10:16 में ''और भी भेड़ें'' किस को कहा गया है ?
13. कोई व्यक्ति मसीह की भेड़ कैसे बनता है ?